Teacher — A.K. Sinha

Topic — Mental Mechanism युनिट-3 का शेष युनिट-4

2 – रूपांतर (Conversion) :— रूपान्तर शब्द का साधारण अर्थ रूप में अन्तर लाना ही है। मानसिक विरोधी इच्छा शक्तियों के संघर्ष से उत्पन्न तनाव को शारीरिक लक्षणों के रूप में परिवर्तित कर प्रकट करना, इस प्रकार संघर्ष से उत्पन्न तनाव का निष्कासन हो जाता है और व्यक्ति का कार्यकुशल संतुलित हो जाता है। तनाव का यह रूपांतर अचेतन रूप से होता है तथा उक्त मनोरचना का उपयोग अहं की शक्ति द्वारा किया जाता है। ब्राउन ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि :- "Conversion is the mechanism through which repressed energy connected with the frustration of basic drives is changed (converted) into functional symptoms of bodily diseases."

उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट होता है कि रूपान्तरण की मनोरचना अचेतन में दमित असामाजिक और अनैतिक इच्छा शक्ति के निष्कासन का एक साधन है। इससे एक ओर तो दमित इच्छा शक्ति का प्रकाशन (expression) होता है तथा दूसरी ओर शारीरिक रूप से बीमार होकर परिवार, मित्रों तथा समाज के अन्य लोगों की सहानुभूति प्राप्त करता है।

इस संदर्भ में यहाँ एक उदाहरण प्रस्तुत करना युक्तिसंगत प्रतीत होता है :- एक युवती की आँख संवेदनशून्य हो गई थी। युवती एक डॉक्टर से प्रेम करती थी, जो उसके पिता का निजी चिकित्सक था। वह युवती उस डॉक्टर से काम-वासना की इच्छा रखती थी

classmate

पृष्ठ 5

साथ ही दोष-भावना से ग्रस्त थी कि एक तरफ उसके पिता बीमार है और दूसरी ओर वह प्रेम आनन्द प्राप्त करने की कामना करती है। इस प्रकार काम-वासना की तृप्ति की इच्छा और दोष-भावना के बीच मानसिक संघर्ष उत्पन्न हुआ। यह संघर्ष उस समय और तीव्र हुआ, जब एक बार अनजाने में उसकी आँख का स्पर्श डॉक्टर के हाथ से हो गया। उस समय उस युवती में तीव्र लैंगिक स्फुरण उत्पन्न हुआ। उसी समय उसमें एक विचार आया कि वर्तमान अवस्था (उसके पिता की बिमारी की अवस्था) में यदि उसकी आँख संवेदनशून्य होती, तो ऐसा लैंगिक स्फुरण नहीं होता। उस युवती का यही विचार उसी क्षण अचेतन में दमित हो गया और आँख की शून्यता की ... बिमारी के रूप में प्रकट हुआ। उस युवती को जब इसका रहस्य बताया गया, तब उसकी बिमारी भी ठीक होने लगी और अन्तत: वह रोगमुक्त होगई।

प्राय: दैनिक जीवन में देखा जाता है कि जब ... परीक्षार्थी परीक्षा में उत्तीर्ण होने या अनुत्तीर्ण होने की शंका से ग्रस्त होता है तब ठीक परीक्षा के समय वह बीमार हो जाता है जैसे बुखार लगना, चक्कर आना तथा मिर्गी का दौरा पड़ने लगता है। इस प्रकार सामान्य जीवन में संघर्षों के रूपान्तरण का उदाहरण मिलता है।

3. उदात्तीकरण (Sublimation) :— मानसिक संघर्षों के समाधान की यह एक मुख्य मनोरचना है। इस मनोरचना के द्वारा मौलिक इच्छाओं की निराशाओं को सामाजिक रूप से लक्ष्यों में स्थानापन्न (Substitution of basic urges Through socialy acceptable goals)

किया जाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि असंतुष्ट या निराशाजनक भाव जो अचेतन में होते हैं, वे सामाजिक रूप से मान्य और स्वीकृत रूपों में निष्कासित होते हैं।

उदाहरण स्वरूप :- प्रेम में निराश व्यक्ति का कविता की रचना, संतानहीन व्यक्ति का अनाथालय अथवा स्कूल की स्थापना आदि उदात्तीकरण के उदाहरण हैं। इसका सुन्दर उदाहरण 'बुनियाद' नाम का धारावाहिक जो दूरदर्शन पर प्रसारित किया जाता था, मैं मिलता है। इस धारावाहिक में 'वीरावाली' नाम की एक पात्र थी जो 'मास्टर हवेलीराम' नाम के व्यक्ति से प्रेम करती थी। पर संयोगवश, उसे अपने प्रेम में निराशा हुई और हवेलीराम ने दूसरी स्त्री से विवाह कर लिया। 'वीरावाली' का यह प्रेम-विषाद बाद में चलकर अनाथालय के प्रति अनुराग हो गया और वह एक प्रतिष्ठित संन्यासिनी बन गई। इस प्रकार प्रेम में हुई निराशा और सामाजिक मान हानि का भाव सामाजिक रूप से सदाचारिणी तथा आध्यात्मिक और नैतिक आदर्शवाली संन्यासिनी के रूप में उदात्तीकृत हुई।

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है कि उदात्तीकरण द्वारा अहं की सुरक्षा दो तरह से होती है। एक तरफ वह (वीरावाली) प्रेम-वियोग के निष्कासन हो जाने के फलस्वरूप उससे होने वाली हानि से बच गई। दूसरी ओर सामाजिक रूप से आदर्श और प्रतिष्ठा का पात्र बनने से उसका अहं मजबूत भी हुई।

(IV) युक्तीकरण (Rationalization) :- Rationalization वह मनोरचना है जिसके द्वारा मानसिक उद्देश्यों का समाधान परोक्ष रूप से होता है। जब व्यक्ति के मन में कुछ ऐसी इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं, जो चेतन प्रतिबंधकों के कारणों अथवा सामाजिक बाधाओं के कारण संतुष्ट नहीं हो पाती; तो व्यक्ति उनसे उत्पन्न विक्षोभ या असंतोष से बच की बचाव द्वारा मानो युक्ति या तर्कों का सहारा लेता है। जैसे परीक्षा में असफल विद्यार्थी अपनी बीमारी, परीक्षक द्वारा ठीक से उत्तर-पुस्तिका की जाँच नहीं करना या अन्यान्य प्रकार की युक्तिसंगत कठिनाइयों के आलोक में अपनी असफलता का कारण मानता है। इससे परीक्षा की तैयारी में उसकी व्यक्तिगत कमजोरी पर पर्दा पड़ जाता है तथा उसकी युक्ति के आलोक में वह व्यक्ति अपने आप को निर्दोष साबित करने में सफल महसूस करता है।

युक्तीकरण (Rationalization) दो प्रकार के होते हैं :—

(a) Sour grapstype,
(b) Sweet lemon type.

(a) Sour grapstype :— इस प्रकार में व्यक्ति उस वस्तु या उद्देश्य में दोष ढूँढता है जिसे प्राप्त करने में वह असफल होता है। जैसे खट्टे अंगूर कौन खाये की कहावत Rationalization के उदाहरण हैं।

(b) Sweet lemon type में व्यक्ति अपनी तुच्छ वस्तुओं को दूसरे के मूल्यवान वस्तुओं की तुलना में युक्ति के सहारे श्रेष्ठ साबित करने की कोशिश करता है। जैसे :- अपनी सूखी रोटी दूसरे की हलवों से अधिक स्वादिष्ट होती है की कहावत इसके उदाहरण हो सकता है। शेष पृष्ठ-8 पर